रात्रिगेय पाँच रागांग रागों की बन्दिशों का सांगीतिक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा की संगीत विषय में पी.एच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

रुपरेखा

2014

निर्देशिका :-

डॉ. (श्रीमती) पर्ली सेबास्टियन
एसोसिएट प्रोफेसर
संगीत विभाग

शोधकर्त्री :-

कु0 चारु रानी
संगीत विभाग
(गायन)

संगीत विभागाध्यक्षा
प्रो0 (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी

कला संकाय प्रमुख
प्रो0 (श्रीमती) उर्मिला आनन्द

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

रात्रिगेय पॉच रागांग रागो की बन्दिशों का सांगीतिक अध्ययन

भूमिका

भारतीय संगीत में राग एक अद्वितीय कल्पना है और राग ही भारतीय संगीत का आधार है। शास्त्रीय संगीत में स्वर यदि प्राण है तो राग उसकी आत्मा है। राग भारतीय संगीत की अनुपम परिकल्पना है जो भारतीय संगीत का सुविकसित व परिष्कृत सूक्ष्म सौन्दर्य चेतना का प्रतीक है। राग संगीत की एक श्रेष्ठतम कृति है जो अन्तर में समस्त सौन्दर्यात्मक तत्त्वों को समेटे हुए है। राग शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका उदगम 'रन्ज' धातु से हुआ है। इसकी उत्पत्ति से यह स्पष्ट होता है कि रन्जकता से ही राग है। राग शब्द का उपयोग मतंग मुनि के काल से हुआ है। भरत मुनि के ग्रन्थ 'नाटयशास्त्र' में जाति गायन का विस्तृत वर्णन मिलता है। नारद मुनि कृत 'नारदीय शिक्षा' में ग्राम रागों तथा हरिवंश पुराण व पंचतंत्र कथाओं आदि में भी राग का उल्लेख हुआ है। राग शब्द सर्वप्रथम मतंग मुनि कृत 'वृहद्देशी' में प्रयुक्त हुआ है तथा उन्होने राग की परिभाषा कुछ इस प्रकार प्रस्तुत की है।

''स्वरवर्ण विशेषण ध्वनिभेदेन वा पुनः

रज्यते येन यः कश्चित सरागः सम्मतः सताम्''

अर्थात्

विशिष्ट स्वर वर्ण(गान क्रिया) से अथवा ध्वनि भेद के द्वारा जो जन रंजन में समर्थ है वह राग है।

महाराणा कुम्भा ने 'संगीतराज' में राग की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है –

''विचित्रवर्णालिंकारा विशेष (षो) यो ध्वनेरिह

ग्रहादि स्वर सन्दर्भो रन्जको राग उच्यते।''

अर्थात्

जिस ध्वनि की रचना में विचित्र अर्थात् भिन्न-भिन्न वर्ण अलंकार हो, जिसमें ग्रहादिस्वरों का सन्दर्भ हो तथा जो रंजक हो वह राग है।

प्राचीन काल से जाति गायन प्रचलित था। जतियों की प्राचीनता के आधार पर उनकी गणना 'मार्ग संगीत' में की जाती थी। रामायण युग में सात शुद्ध जातियाँ प्रचार में थी और उनको उच्चश्रेणीय संगीत का स्थान प्राप्त था। भरत के नाट्यशास्त्र में जाति, जाति राग तथा ग्राम राग का उल्लेख मिलता है। संख्याओं के आधार पर 18 जातियाँ थीं जिनमें से सात शुद्ध ग्यारह विकृत जातियाँ थीं तथा जातियों के अतिरिक्त सात ग्राम राग प्रचार में थे। जाति को राग जननी कहा गया है तथा जाति के दस लक्षणों ग्रहांश, तार, मन्द्र, न्यास, अपन्यास, सन्यास, विन्यास, अल्पत्व, बहुत्व के नियमों को राग के नियमों के अन्तर्गत रखा गया तथा धीरे- धीरे जाति की परिणिती राग में हो गई।

प्राचीन काल से ही विद्वानों द्वारा रागों का भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्गीकरण किया गया। नारद के मध्ययुगीन ग्रन्थ 'संगीत मकरन्द' से राग रागिनी वर्गीकरण का सूत्रपात्र माना जाता है। इसमें रागों का परिवारिक वर्गीकरण करके मुख्यत: छ: प्रमुख राग तथा प्रत्येक राग की छ: मुख्य रागिनीयाॅ मानी। इस सम्बन्ध में चार मत प्रचलित है जो कि हनुमत मत, सोमेश्वर मत, कल्लिनाथ मत और भरत मत है। 14वीं ई0 में माधवाचार्य जी ने प्रचलित रागों का शास्त्रीय वर्गीकरण किया प्रारम्भ में 15 मेल माने गये तत्पश्चात् नवीन राग रुपों को ध्यान में रखते हुए नये मेल भी जोड़े गये। दक्षिण भारत के संगीतज्ञ 'व्यंकटमुखी' जी ने 12 स्वरों के आधार पर 72 मेलों की रचाना की। पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे जी ने कुछ विशिष्ट व मुख्य रागों को दस थाटों के अन्तर्गत रख उनका प्रचार प्रसार किया। पण्डित भातखण्डे जी के भागीरथ प्रयत्नों से इस पद्धति को उत्तरी संगीत में मान्यता प्राप्त हुई। आधुनिक समय में पं. नारायण मोरेश्वर खरे जी ने 'रागांग पद्धति' का सूत्रपात किया। स्वर साधर्म्य एवं चलन के आधार पर वर्गीकरण, इस प्रणाली का मुख्य सूत्र है। खरे जी ने इस पद्धति में तीस राग निर्धारित किये जिसमें कुछ विशेष स्वर संगतियो तथा चलन के आधार पर बनने वाले रागों को एक वर्ग में रखा जाता है।

राग की परिकल्पना भारतीय संगीत की प्रमुख विशेषता है। इसके कई तत्व है जिनमें से एक है समय-सिद्धान्त। हिन्दुस्तानी पद्धति में राग और समय निर्धारण के सिद्धान्त का विशेष महत्व रहा है जिसके अनुसार प्रत्येक राग के गायन वादन काल को दिन व रात्रि के समय चक्रों में तथा ऋतुओं के समय चक्रों में वर्गीकृत किया गया है।

प्रबन्ध, गीत, बन्दिश समानार्थी शब्द है। संगीत का आधार स्वर सौन्दर्य है। राग अमूर्त है तथा बन्दिश राग का मूर्त रुप है। 'संगीत रत्नाकर' के टीकाकार 'कल्लीनाथ जी' ने कहा है कि

''रंजक: स्वरसन्दर्भो गीतमित्यभीधीयते''

अर्थात्

प्रीति कर स्वर सन्दर्भ का नाम गीत है।

इसके तीन अंग माने जाते है- स्वर, ताल और पद। शास्त्रों में गान के दो भेद मिलते है पहला निबद्ध गान तथा दूसरा अनिबद्ध गान। बन्दिश निबद्ध गान में आती है। अत: बन्दिश का तात्पर्य है कोई भी बँधी हुइ चीज अथवा बाँधने की क्रिया। एक संगीतिक एवं सुनियोजित रचना जो स्वर ताल में निबद्ध हो 'बन्दिश' कहलाती है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग में बन्दिश का महत्वपूर्ण स्थान है। बन्दिश राग का दर्पण है जिससे राग के स्वरुप को साकार रुप में देखा जा सकता है। बन्दिश राग की सांगीतिक सीमाऐं तथा भावनात्मक सम्भावनायें अंकित करती है। बन्दिशों के द्वारा राग को एक निश्चित स्वरुप प्राप्त होता है और स्वरों के प्रयोग की विधि सम्मुख आती है। एक ही राग की पृथक्-पृथक् बन्दिशों की प्रस्तुति द्वारा कलाकर विभिन्न प्रकार के वातावरण की सृष्टि करने में समर्थ होता है। भिन्न-भिन्न बन्दिशों में शब्दों का उच्च स्तर, लय ताल की खूबसूरती, चित्ताकर्षक स्वरावलियों आदि के द्वारा राग चित्ताकर्षक लगता है। बन्दिशों के द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है।

बन्दिश के द्वारा हम ख़्याल गायकी का रुप प्रस्तुत करते है। पहले ध्रुवपद गान प्रचार में था जिसका स्थान ख़्याल गायकी ने ले लिया है। अतः ध्रुवपद को ख़्याल गायन की सीढ़ी कहा जा सकता है। ख़्याल एक स्वर प्रधान गायन शैली मानी जाती है क्योंकि इसमें कल्पना की गहराई, अभिव्यक्ति की सशक्ता, चित्त की एकाग्रता तथा ध्यानावस्थित कलाकार की चित्तावृतियों का निरोध रहता है। ख़्याल गायन के राग विस्तार में स्वरों के नाजुक और भाव पूर्ण स्वर सन्निवेश शब्दों का भावुक और मधुर उच्चारण शब्दों के साथ राग की बढ़त और राग द्वारा शब्दावली को ख़्याल गायन में प्रमुख स्थान प्राप्त होता है जिसमें गायक की प्रतिभा और कल्पना को अवसर मिलता है। ख़्याल गायन का प्रस्तुतिकरण दो प्रकार से किया जाता है 1- विलम्बित ख़्याल 2- द्रुत ख़्याल।

बंदिश राग का एक व्यवस्थित रुप है। बंदिश का अर्थ है स्वर व ताल में बँधी रचना जो राग को पूर्ण रुप से स्वरुपित करती है। सुषिर वाद्यों, तंत्री वाद्यों आदि में भले ही शब्द नहीं होते है परन्तु बंदिश के द्वारा स्वरों के माध्यम से आकार दिया जाता है। बंदिश स्वर बद्ध, ताल वद्ध, रुप लय बद्ध होती है। इसमें वाद्यों की तकनीकी का समावेश होता है। इस सन्दर्भ में शोधार्थीनी ने अपने विषय से सम्बन्धित पुस्तको द्वारा, शोध प्रबन्धों द्वारा, नेट, इंटरनेट आदि अन्य स्रोतो से जो अध्ययन हुए है उनका विवरण सम्बन्धित साहित्य में दिया है।

1. सन् 2002 में सुश्री सोनिका सिन्हा ने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'रागों का ठाठ एवं रागांग के दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन' पर अपना शोध कार्य किया जिसका सार कुछ इस प्रकार दिया है।

1. राग वर्गीकरण के लिए प्रचलित दोनों ही (ठाठ एवं रांगाग) पद्धतियों की कुछ विशेषताए है।

2. वर्तमान सन्दर्भ में राग वर्गीकरण के लिए ठाठ व रागांग दोनों ही पद्धतियों का प्रयोग उपयुक्त है।

2. सन् 1998 में सुश्री प्रीतम प्यारी जी ने 'रागों के समय सिद्धान्त का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (संधि प्रकाश रागों के विशेष सन्दर्भ में)' पर अपना शोध कार्य सम्पन्न किया जिसका निष्कर्ष कुछ इस प्रकार है।

1. समयानुसार राग के गायन कलाकार का प्रदर्शन अधिक प्रभावशाली होता है तथा श्रोतागण उस राग का आनन्द प्राप्त कर सकते है।

3. In 2008 U.Timothy Newman reaserched on "The process of music composition a qualitive self study" and here are the findings given below -

1. The study provides both general and detailed documentations of the author's unfolding compositional process.

2. To collect store organize and lizes a newly designed research instruments that employes the software program logic.

4. In 2009, M .Aron Durst worked on "A Descriptive Catalog of saxophone compositions of Robert Lemay" Durst examines Lemay's compositions and provide a descriptive catalog for performers and teachers interested in his music and he discussed so many compositions and made comparison between the compositions.

5. In 2008 Park Jeong Hoa researched on "analytical of four piano compositions by Hyo Shin Na variations rain study and walking walking and he examines the four piano works in detail section by section analytically and with suggestions for interpretations and performances .Na's treatment of the borrowed musical element is significant particularly her techniques of development and transformation and her creation of non traditional formal logic .

1. Na's composition output consists of approximately 70 works in a wide variety of geners .

6. In 2009 Menton Allen Walter worked on the persistant fantasy extended single movement form in 20th century composition [vol-1] and walter examines an analytical discussion of the four work focuses on their structural similarities through a common reliance on extended single movement form ,although each work civilizes a different variations of the form .

7. There is a dissertation work on " Convivencia a fantasy for guitar and strings quarlet by Menton Allen Walter in 2009 and the dissertation consists of an original music composition convivencia a fantasy for guitar and strings quarlet.The composition is written in extended single movement form.

पुस्तकें

1. हिन्दुस्तानी संगीत में सारंग, मल्हार और कान्हडा, प्रेमलता नाहर, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्टिव्यूटर्स नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2002

2. संधि प्रकाश राग, प्रियंका कौशल, संजय प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2004

3. D.T Jhoshi And his compositions , Padamvibhushan Pt. Debu Chaudhary, Sanjay Prakashan Delhi India ,First edition- 2005

4. पंजाबी भाषा में ख्याल की पारम्परिक बंदिशें, गीता पेन्तल, प्रोफेसर अजीत सिंह पेन्तल, संजय प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 2004

5. Singnificance of Compositional forms in hindustani classical music, Dr. Manjushree Tyagi ,pratibha prakashan Delhi .

6. पं. भातखण्डे जी का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का महत्व, डॉ निर्मल खन्ना, 1992

7. राग सारंग के विकास का एतिहासिक अध्ययन तथा उसका मल्हार, कान्हडा तथा अन्य रागों पर प्रभाव, डॉ दीपक कुमार त्रिपाठी 2010

8. सदारंगीले की ख्याल बंदिशों का अध्ययन, सीमा सक्सैना 1990

9. ऋतु कालिक रागों में पद की विषयवस्तु एवं रसानुभति एवं अध्ययन, प्रतिक्षा पारिख 2013

10. सदारंग–अदारंग की बंदिशों के सांगीतिक गुणों का विवेचनात्क अध्ययन, स्मिता मदुस्कर 2008

11. संगीत कल्याण अंक लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस, उ0 प्र0, जनवरी 1954

12. कान्हड़ा का उदगम् एवं विकास, डॉ0 सरोज घोष, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली प्रथम सस्करण, 2000

शोधार्त्री ने अधिक से अधिक शोध प्रबन्धों को पुस्तकों, लेखों तथा इंटरनेट पर अपने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य को देखा तथा उनका अध्ययन किया है परन्तु कुछ विषयों का सार किसी भी प्रकार से प्राप्त न हो पाने के कारण उनका अध्ययन नहीं हो पाया है अत: उन विषय का सक्षेप में विवरण इस प्रकार दिया है।

. 1. पं. भातखण्डे जी के हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का महत्व, डॉ. निर्मल खन्ना, 1992

3. ऋतुकालिक रागों में पद की विषयवस्तु एवं रसानुभूति एक अध्ययन, प्रतीक्षा पारिख, 2013

4. राग सांरग के विकास का एतिहासिक अध्ययन तथा उसका मल्हार, कान्हडा तथा अन्य रागों पर प्रभाव, डॉ दीपक कुमार त्रिपाठी, 2010

5. सदारंगीले की ख्याल बंदिशों का अध्ययन, सीमा सक्सेना, 1990

6. सदारंग अदारंग की बंदिशों के सांगीतिक गुणों का विवेचनात्क अध्ययन, स्मिता मदुस्कर, 2008

7. A statistical approach to style characterization through analysis of raga in musical composition of the music trinity, Dr. P.S.N Moorthi, 1997.

◆ **विषय का प्रादुर्भाव**– राग अमूर्त है तथा बन्दिश राग का मूर्त रुप है। किसी राग के भिन्न स्वरुपों की अनगिनत बन्दिशें होती है। जिससे राग का स्वरुप पूर्ण रुप से प्रकट होता है अतः एक ही राग के ख़्याल की कई बन्दिशों एवं भिन्न बन्दिशों में राग का स्वरुप किस प्रकार से अभिव्यक्त होता है उसकी जिज्ञासा वश शोधकर्त्री ने शोधकार्य के लिये इस विषय का चुनाव किया है।

◆ **विषय कथन**– शोधकर्त्री ने अपने शोध प्रबन्ध कार्य हेतु ''रात्रिगेय पाँच रागांग रागों की बन्दिशों का सांगीतिक अध्ययन'' विषय का चुनाव किया है।

◆ **अध्ययन के उद्देश्य**– शोधकर्त्री चयनित रात्रिगेय रागांग रागों की बन्दिशों का सांगीतिक तथा साहित्यिक पक्ष का अध्ययन करेगी।

◆ **विषय का परिसीमांकन**– प्रत्येक रागांगों पर कार्य करना सम्भव नहीं है। समय, कार्य एवं स्त्रोतों की सीमा को घ्यान में रखते हुए शोधकर्त्री केवल पाँच रागांग रागों– कल्याण, बागेश्री, कान्हाड़ा, मल्हार, कौंस रागों पर ही कार्य करेगी। वस्तुतः प्रत्येक अंग पर शोध कार्य किसी न किसी रुप में सम्पन्न हुआ है परन्तु जिन अंगों का चयन शोधकत्री ने किया है, उनकी बंदिशों के सांगीतिक पक्ष को लेते हुआ कार्य नहीं किया गया है इसलिए शोधकर्त्री इस विषय पर कार्य करेगी।

◆ **अध्ययन की उपयोगिता**– राग की भिन्न बंदिशों के द्वारा राग के स्वरुप को समझा जा सकता है। एक राग की भिन्न बंदिशों के अध्ययन से आने वाले विद्यार्थियों को सहायता मिल सकेगी।

◆ **अध्ययन की विधि**– यह अध्ययन सर्वेक्षणात्मक साक्षात्कार एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा किया जायेगा।

◆ **अध्ययन के स्त्रोत**– यह अध्ययन उपलब्ध उपकरण टेप, डीविडी, नेट,

पुस्तकालय, साक्षात्कार विविध मंच प्रदर्शनों, विभिन्न संगोष्ठियों आदि की सहायता से किया जायेगा।

◆ **अध्ययन की रुपरेखा**– शोध प्राप्त विषय सामग्री को सुव्यवस्थित रुप प्रदान करने हेतु सामग्री को निम्न अध्यायों में समायोजित किया जायेगा–

1. प्रथम अध्याय – भारतीय संगीत में राग
2. द्वितीय अध्याय – राग वर्गीकरण व्यवस्था
3. तृतीय अध्याय – चयनित रागांग रागों का विवरण
4. चतुर्थ अध्याय – राग में बन्दिश की भूमिका
5. पंचम अध्याय – चयनित रागांगों रागों की बंदिशों का अध्ययन
6. षष्ठम अध्याय – उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें :

1. स्व. पं. पटवर्धन, विनायक राव – राग विज्ञान, संगीत कार्यालय हाथरस, प्रथम संस्करण 1936
2. पं. झा, रामाश्रय (रामरंग) – अभिनव गीतांजली, संगीत सदन प्रकाशन, 134 साउथ मलाका, इलाहबाद
3. पाठक, सुनन्दा – हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली, जनवरी, 1989
4. राजन, रेणू – हिन्दुस्तानी संगीत में राग लक्षण, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली, 1996
5. डॉ. सागर, डी. बी. क्षीर – ब्रहद्देशी, स्कीम पब्लिकेशन जयपुर, 1998
6. डॉ. पुरी मृदुला – संगीत में मीमांसा, सत्यम पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2007

पत्रिकायें :

1. संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस (उ0प्र0), जुलाई 2013
2. संगीत कला विहार, सितम्बर 2009

सेवा में,

अस़िस्टेन्ट रजिस्टार

डी. ई. आई. दयालबाग, आगरा

महोदय,

विनय निवेदन यह है कि, दिनांक 10/12/2013 को संगीत विषय में आर.डी.सी में मेरी शोध की रुपरेखा पर विचार किया गया। जिसके सन्दर्भ में आपका पत्र नं EX/PHD 21/01/2014 को मुझे प्राप्त हुआ। आर. डी. सी. में उपस्थित संगीत विशेषज्ञों ने मेरी पी. एच. डी. हेतु प्रस्तुत शोध की रुपरेखा में कुछ संशोधन बताये है जो कुछ इस प्रकार है-

1. विशेषज्ञों द्वारा सन्दर्भ साहित्य में राग-विज्ञान तथा गीतांजलि इन दो पुस्तकों को सम्मिलित करने का परामर्श दिया जिससे शोधकर्त्री ने सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि में सम्मिलित किया है।

2. विशेषज्ञों द्वारा पूर्व शोध विषय 'कतिपय रागाांग रागों की बंदिशों का सांगीतिक अध्ययन' में संशोधन करके 'रात्रिगेय पॉच रागांग रागों की बंदिशों का सांगीतिक अध्ययन' करने का परामर्श दिया जिसे शोधकर्त्री ने इसमें संशोधन किया है।

3. विशेषज्ञों ने रागांग रागों की संख्या पॉच तथा बंदिशों की संख्या अधिक से अधिक पचास करने का परामर्श दिया है जिसे शोधकर्त्री अपने शोध प्रबन्ध में सम्मिलित करेगी।

4. विशेषज्ञों ने बंदिशों में तुलनात्मक अध्ययन करने की सलाह दी है जिसे शोधकर्त्री अपने शोध प्रबन्ध में सम्मिलित करेगी।

5. विशेषज्ञों द्वारा पंचम अध्याय को चतुर्थ अध्याय तथा चतुर्थ अध्याय को पंचम अध्याय करने का परामर्श दिया जिसे शोधकर्त्री ने अपनी शोध प्रबन्ध की रुपरेखा में सम्मिलित किया।

विशेषज्ञों द्वारा दिये गये सुझावों को शोधकर्त्री ने अपने शोध प्रबन्ध की रुपरेखा के अन्तर्गत सम्मिलित करते हुए संशोधन किये है। अत: आपसे निवेदन है कि कृपया आप संशोधित रुपरेखा स्वीकार करने का कष्ट करें।

सधन्यवाद

विभागाध्यक्षा - प्रो. सुभद्र कुमारी सतसंगी　　　　संकाय प्रमुख - प्रो. उर्मिला आनन्द

निर्देशिका - डॉ. श्रीमती पर्लि सेबस्टियन　　　　शोध छात्रा - कु. चारु रानी